मैं मर गया

काव्य संग्रह

डॉ. रमेश टण्डन

28/09/2025 11:10

मैं मर गया

(काव्य-संग्रह)

ISBN- 978-93-48835-08-6

●

प्रकाशक

सर्वप्रिय प्रकाशन

1569, प्रथम मंजिल, चर्च रोड,

कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

मो. 94253-58748

e-mail : sarvapriyaprakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : कन्हैया

प्रथम संस्करण : 2025

मूल्य : 100.00

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

●

Published by

Sarvpriya Prakashan

1569, First Floor Church Road,

Kashmiri Gate, Delhi-110006

Raipur Office

Vaibhav Prakashan

P.S.City Road, Gali No. 5

Shyam Chowk, New Changorabhatha,

Raipur, Chhattisgarh - 492013

First Edition : 2025

Price : Rs.100.00

अपने ही विद्यार्थियों से काव्य संग्रह विमोचन कर कवि डॉ. रमेश टंडन ने रचा इतिहास

साहित्य जगत के अद्वितीय काव्य संग्रह मैं मर गया का हुआ विमोचन

गर्वित मातृ भूमि/वीपीएम

शासकीय महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया के हिंदी विभाग में पदस्थ सहायक प्राध्यापक डॉ. रमेश टंडन के द्वितीय काव्य संग्रह का विमोचन दिनांक 27 सितम्बर 2025 को हिंदी विभाग में पूर्ण सादगी के साथ संपन्न हुआ।विमोचनकर्ता कोई बड़े साहित्यकार या नामी व्यक्ति नहीं थे, बल्कि खुद के पूर्व और वर्तमान छात्र एवं विभागीय शिक्षक हुए। ये छात्र भविष्य के साहित्यकार, प्रोफेसर या अन्य विशिष्ट प्रतिभा के मालिक हो सकते हैं। पूर्व छात्र यामिनी राठौर, प्रियंका पटेल, दामोदर पटेल, पिंकी साहू, मुकेश कुमार राठिया, वर्तमान छात्र उमा साहू, रीना साहू, तानिया राठौर, रतिराम भारद्वाज, ईशा राठिया, शिक्षक डॉ. डायमंड साहू, प्रो. कुसुम चौहान, प्रो. अंजना शास्त्री के चेहरे पर पुस्तक विमोचन करते हुए जो खुशी दिखाई दी, वह दिल को शुकून पहुँचाने वाली थी। समीक्षक के रूप में डॉ डायमण्ड साहू ने विस्तार से अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि दिल्ली से प्रकाशित यह काव्य कृति के तीन भाग हैं, मरने से पहले, मर गया, मरने के बाद। मर गया भाग में मैं मर गया, माँ मर गई, पिता मर गया, पति मर गया, पत्नी मर गई, वह मर गया, बेटा मर गया, लोग मर गए, लगन मर गई सहित अट्ठारह कविताएँ हैं इसमें किन परिस्थितियों में लोग जिन्दा रहकर भी मृतप्राय हो जाते हैं उसका जिक्र है. मरने से पहले और मरने के बाद लम्बी कविताएँ हैं, जिसमें एक इंसान का देश की सुरक्षा में, पर्यावरण संवर्धन में, दिव्यांगों के लिए, समाज के प्रति दायित्व के रूप में, स्वच्छता में, छात्रों के अध्ययन में, उद्यमिता के क्षेत्र में तथा ऐसे अनेक पहलुओं पर कवि के विचार हैं।

दूसरी समीक्षक रीना साहू ने कहा कि मात्र उन्तीस दिनों में लिखा गया काव्य संग्रह मैं मर गया केवल कविताओं का संग्रह ही नहीं, बल्कि यह लेखक की आत्मा, स्मृतियों और जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। इसमें जीवन और मृत्यु के बीच संतुलन, सामाजिक विसंगतियों, आत्मस्वीकृति, पारिवारिक संबंधों की जटिलता और मनुष्य की भावनात्मक यात्रा को बड़ी संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया गया है। इस पुस्तक को पढ़ते समय पाठक को लगता है कि वह लेखक की निजी डायरी में झांक रहा है। परन्तु वास्तव में पाठक हर इंसान की निजी डायरी में झांक रहा होता है। यहाँ हर पन्ने पर जीवन की गहरी पीड़ा, सपनों के टूटने की आवाज और फिर से उम्मीद की लौ जलाने का साहस मौजूद है। पुस्तक का शीर्षक मैं मर गया पहली नजर में मृत्यु का प्रतीक लगता है, लेकिन वास्तव में यह मृत्यु का उत्सव नहीं, बल्कि एक गहन आत्मबोध की यात्रा है। लेखक डॉ. रमेश टंडन यहाँ मृत्यु को केवल शारीरिक अंत नहीं मानते, बल्कि सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक परतों में बंटे हुए जीवन से परे उठने की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

कवि व लेखक
डॉ. रमेश कुमार टण्डन

विमोचनकर्ताओं को कवि ने स्वयं पुस्तक की प्रति भेंट भी की।छात्रा ईशा राठिया के मंच संचालन और छात्रा उमा साहू के आभार ज्ञापन में सम्पन्न विमोचन कार्यक्रम के दौरान विभागीय शिक्षकों, छात्रों, वेदप्रकाश महन्त और टिकेश डनसेना आदि अनेक पूर्व छात्रों ने पुस्तक प्रकाशन पर हर्ष व्यक्त करते हुए कवि डॉ टंडन को बधाइयाँ दी।इस अवसर पर विभाग के शिक्षकों सहित जीतू जोशी, ईशा राठिया, चांदनी सिदार, विकास टंडन, किशन कुमार, रीना साहू, उमा साहू, अंजली सिदार, कुन्ती सिदार, रतिराम भारद्वाज, रामकुमार, तानिया राठौर, नेहा राठिया, राहुल दास, पुष्पेन्द्र, दुर्गेश पटेल, विनायक पटेल, कौशल दास, मनोज कुमार बैगा, रुक्मणी राठिया, टंकेश्वरी राठिया, ममता केंवट, काजल राठिया, ज्योति कर्ष, राजकुमारी सिदार, नर्मदा राठिया, निशा, सोनू कुमार बंजारे, पुष्पा नागवंशी व सुनीता राठिया उपस्थित रहे।